"भारतीय संस्कृति एवं समाज पर पर्यावरण का प्रभाव"

अजय कुमार
शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग
जे०वी० जैन कॉलेज, सहारनपुर (उ०प्र०)

सारांशिका

"भारतीय संस्कृति में पर्यावरण को एक विशिष्ट स्थान दिया गया है। पर्यावरण को नष्ट होने से बचाना, पर्यावरण का संरक्षण करना प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है" भारतीय संस्कृति, सभ्यता, समाज एवं दर्शन का अध्ययन करने से पता चलता है कि हमारे पूर्वजों, ऋषियों, साधुओं, मुनियों एवं विद्वानों ने हजारों वर्षों पहले ही पर्यावरण एवं पर्यावरण महत्व को समझ लिया था। पर्यावरण के अनुकूल ही आचरण किया जाता रहा है। भारतीय संस्कृति में सूर्य की उपासना की जाती है जो पृथ्वी पर ऊर्जा का एकमात्र स्रोत है तथा जिसके कारण पृथ्वी पर जीवन संभव है। प्राणवायु देने वाले वृक्षों की पूजा की जाती है, कहीं जीवनदायिनी नदियों की भी पूजा की जाती है। सूर्य, वृक्षों, नदियों को धार्मिक, सांस्कृतिक मान्यता देने का कारण पर्यावरण संरक्षण ही है। प्रकृति को मानना या कहें कि प्रकृति की पूजा करना भारतीय संस्कृति एवं समाज का एक अभिन्न अंग है।

मुख्य शब्द : संस्कृति, पर्यावरण, समाज, सनातन, वैदिक, धार्मिक।

सौरमंडल में ज्ञात ग्रहों में पृथ्वी एक मात्र ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन संभव है। इसका एकमात्र कारण यहाँ का पर्यावरण है। पर्यावरण क्या है? भौतिक वैज्ञानिक इसे भौतिक पर्यावरण के रूप में परिभाषित करते हैं। जीव वैज्ञानिक इसे जैविक पर्यावरण के रूप में परिभाषित करते हैं। सामाजिक वैज्ञानिक इसे सामाजिक, आर्थिक, संगठनात्मक पर्यावरण के रूप में परिभाषित करते हैं।

"पर्यावरण से तात्पर्य जैविक एवं अजैविक घटकों एवं उनके आसपास के वातावरण के सम्मिलित रूप से है जो पृथ्वी पर जीवन को संभव बनाता है अर्थात ऐसा प्राकृतिक परिवेश जो पृथ्वी पर जीवन को विकसित, पोषित एवं समाप्त होने में सहायता करता है।

पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 के अनुसार पर्यावरण किसी जीव के चारों तरफ घिरे भौतिक एवं जैविक दशाएं एवं उनके साथ अंतःक्रिया को सम्मिलित किया जाता है।

'वुडवर्थ' ने पर्यावरण को व्यक्ति को प्रभावित करने वाली सभी वस्तुओं के रूप में स्वीकार करते हुए लिखा है–

"पर्यावरण के अंतर्गत जीन्स को छोड़कर वे सभी वस्तुएं आ जाती हैं जो व्यक्ति को प्रभावित करती है। पर्यावरण शब्द का प्रयोग उन सभी परिस्थितियों के लिए किया जाता है जो गर्भधारण से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति पर अपना प्रभाव डालती है।

'ब्रिटानिका एनसाइक्लोपीडिया' में पर्यावरण को परिभाषित किया गया है–

"पर्यावरण भौतिक, रासायनिक और जैविक क्रियाओं एवं तत्वों का एक जटिल मिश्रण है। यह किसी जीव अथवा परिस्थितिकीय पर इस प्रकार क्रिया करता है ताकि उसके रूप एवं जीविता का निर्धारण हो सके।"

होलेण्ड तथा इगलस के अनुसार "पर्यावरण उन सभी वाह्य शक्तियों एवं प्रभावों का वर्णन करता है जो प्राणी जगत के जीवन व्यवहार, स्वभाव, विकास तथा परिपक्वता को प्रभावित करती है।"

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि व्यक्ति पर उनके भौतिक वातावरण के साथ–साथ सामाजिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है क्योंकि मनुष्य प्राकृतिक क्षेत्र से लेकर सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में रहता है। अतः ये सभी पर्यावरण की रचना करते हैं। पर्यावरण सभी जैविक तथा अजैविक अवयवों का सम्मिश्रण है। पर्यावरण के विभिन्न अवयव एक दूसरे से जुड़े रहते हैं तथा परस्पर आश्रित होते हैं। पर्यावरण के कुछ कारक संसाधन के रूप में तथा कुछ कारक नियंत्रित नियंत्रक के रूप में कार्य करते हैं।

प्राचीन काल के संदर्भ में यदि हम पर्यावरण और इसके संरक्षण की बात करें तो हमारे भारतीय समाज एवं संस्कृति से गहरा जुड़ाव है। सभी प्राचीन सभ्यताएं नदियों के किनारे विकसित हुई क्योंकि मनुष्यों ने अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये अपना निवास स्थान बनाकर वहां बसना प्रारंभ किया। सिंधु घाटी सभ्यता हो या मिस्र की सभ्यता या कोई अन्य प्राचीन सभ्यता इन सब का अद्भुत उदाहरण है।

"भारतीय संस्कृति में पर्यावरण को एक विशिष्ट स्थान दिया गया है। पर्यावरण को नष्ट होने से बचाना, पर्यावरण का संरक्षण करना प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। भारतीय संस्कृति, सभ्यता, समाज एवं दर्शन का अध्ययन करने से पता चलता है कि हमारे पूर्वजों, ऋषियों, साधुओं, मुनियों एवं विद्वानों ने हजारों वर्षों पहले ही पर्यावरण एवं पर्यावरण महत्व को समझ लिया था। पर्यावरण के अनुकूल ही आचरण किया जाता रहा है। भारतीय संस्कृति में सूर्य की उपासना की जाती है जो पृथ्वी पर ऊर्जा का एकमात्र स्रोत है तथा जिसके कारण पृथ्वी पर जीवन संभव है। प्राणवायु देने वाले वृक्षों की पूजा की जाती है, कहीं जीवनदायिनी नदियों की भी पूजा की जाती है। सूर्य, वृक्षों, नदियों को धार्मिक, सांस्कृतिक मान्यता देने का कारण पर्यावरण संरक्षण ही है।

प्रकृति को मानना या कहे प्रकृति की पूजा करना भारतीय संस्कृति एवं समाज का एक अभिन्न अंग है।

भारतीय सनातन धर्म में विभिन्न देवी–देवताओं के रूप में प्रकृति पूजा पर बल दिया गया जैसे वर्षा के देवता इंद्र की पूजा की जाती है। प्रकृति पूजा तो सनातन धर्म का अभिन्न अंग है इसके साथ ही यहां अनेक पशु जैसें– गाय, भैंस, बकरी, कुत्ता, बैल आदि की भी पूजा की जाती रही है। पीपल वृक्ष की पूजा की जाती है क्योंकि वह सबसे ज्यादा प्राण वायु ऑक्सीजन प्रदान करता है।

भारतीय संस्कृति में अहिंसा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। सनातन धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म सभी में अहिंसा के महत्व को स्वीकारा है तथा अहिंसा को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया है। सभी चेतन वस्तुओं में आत्मा होती है तथा जीव जंतुओं के विनाश को भारतीय समाज में अक्षम्य माना है अर्थात जीव जंतुओं का विनाश करने वाले व्यक्ति, समाज को क्षमा नहीं किया जा सकता है। सभी जीवित प्राणियों की रक्षा करना व्यक्ति का परम धर्म है। वैत्वरीय उपनिषद में कहा गया है कि–"ईश्वरीय आत्मा से आकाश की, आकाश से वायु की, वायु की अग्नि से जल की और जल से पृथ्वी की उत्पत्ति हुई है। पृथ्वी ने पेड़–पौधों को जन्म दिया और सभी जंतुओं को जन्म दिया। इस प्रकार इस सृष्टि में प्रत्येक जीव जंतु की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भारतीय संस्कृति और दर्शन ने प्रकृति, ईश्वर व सभी जीव जंतुओं में संबंध स्थापित किया। अहिंसा परम धर्म है, इस प्रकार की सोच का कारण प्रकृति ही है।

आध्यात्मिक समाज होने के कारण प्राचीन भारतीय लेखन का उद्देश्य धार्मिक, दार्शनिक, साहित्यिक व सामाजिक परंपराओं को जीवित रखना था। हिंदू धर्म के अंतर्गत वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, वेदांग, महाभारत, रामायण, पुराण आदि लिखे गए। बौद्ध धर्म में त्रिपिटक शोध व जातक कथाएं, जैन धर्म में भी अनेकों ग्रंथों की रचना की गई। इन सब धर्म ग्रंथों में पर्यावरण को विशेष महत्व दिया गया है। भारतीय संस्कृति में पृथ्वी को मातृवत स्थान दिया गया है। पृथ्वी को माता के समान सम्मानीय माना गया है। इसलिए प्रातःकाल उठने पर धरती पर पैर रखने से पहले उससे क्षमा याचना मांगने का विधान है। पृथ्वी मानव के साथ–साथ समस्त प्राणियों का एकमात्र आधार है। यह भूमि हिरण्यगर्भा, वसुंधरा, विशंभरा तथा बल बुद्धि प्रदायिनी है। अथर्ववेद में कहा गया है–जो माता हमारा पोषण करती है उसे सुरक्षित बनाए रखना हमारा पावन कर्तव्य है।

भारतीय संस्कृति में वृक्षों को आध्यात्मिक महत्व दिया गया है, वृक्ष रक्षा तथा वृक्षारोपण को मानव कर्तव्यों में सम्मलित किया गया है। भारतीय संस्कृति में तीज, त्योहारों एवं सामाजिक अनुष्ठानों में वृक्ष पूजा का विधान किया गया है। वृक्षों का महत्व इन बातों से और स्पष्ट हो जाता है कि शिव पूजा में बेलपत्र, यज्ञ में आम्र पत्रों का प्रयोग किया जाता है। तुलसी के पौधे की पूजा दैनिक रूप से की जाती है। तुलसी का पौधा भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। सर्वविदित है कि पंचामृत प्रसाद में तुलसी पत्र का समावेश अनिवार्य है इसके अभाव में इन्हें पूर्ण नहीं माना जाता है। तुलसी के समान ही पीपल वृक्ष भी भारतीय संस्कृति में पूजा योग्य है। ऐसा कहा जाता है कि पीपल वृक्ष के अंग–अंग में देवताओं के वास है। अतः हमे इसे पूर्ण आस्था के साथ सुरक्षित रखना चाहिए। बौद्ध धर्म में पीपल के वृक्ष को बोधिवृक्ष के नाम से जाना जाता है क्योंकि इसी वृक्ष के नीचे महात्मा बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी।

हमारी संस्कृति पर्यावरण संरक्षण की यह परंपरा मात्र इतने तक सीमित नहीं है, वरन् विभिन्न भारतीय त्योहारों में पर्वों का निर्धारण प्राकृतिक चक्र को ध्यान में रखकर किया गया है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भारतीय समाज एवं संस्कृति को पर्यावरण ने विभिन्न रूपों में प्रभावित किया है। स्वच्छ व स्वस्थ पर्यावरण के महत्व को जानकर ही यहां के धार्मिक ग्रंथों व दर्शन में पर्यावरण संरक्षण पर बल दिया गया था ।

निष्कर्ष

पर्यावरण मानव जीवन को आधार प्रदान करता है तथा पर्यावरण के तत्वों की विधमानता से ही पृथ्वी पर जीवन संभव है। जैन समुदाय की सभी आवश्यकताएं पर्यावरण के तत्वों द्वारा ही पूर्ण होती हैं। हमारी भारतीय संस्कृति में विभिन्न त्योहार हों या दैनिक क्रियाकलापों के निर्देश सभी में प्रकृति संरक्षण व संवर्धन की शिक्षा ही निहित है।

संदर्भ सूची

1. कुलश्रेष्ठ सुषमा सांस्कृतिक, साहित्य एवं पर्यावरण, ईस्टर्न बुक लिंकर्स दिल्ली।
2. यादव वी एस पर्यावरण : वर्तमान और भविष्य, राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली।
3. विश्नोई कृष्णा राम, धर्म और पर्यावरण, दया पब्लिशिंग हाउस दिल्ली।
4. सोजित्रा विजय एस, वैदिक संस्कृति एवं पर्यावरण संरक्षण, पैराडाइज पब्लिकेशन जयपुर।
5. चौधरी रेनू "पर्यावरण शिक्षा", शुभम प्रकाशन जयपुर।
6. तोमर गजेंद्र सिंह, "पर्यावरण शिक्षा" आर लाल बुक डिपो मेरठ।